



UN – 037

III Semester B.Sc. Examination, Nov./Dec. 2015
(Fresh) (CBCS)
(2015-2016 and Onwards)
LANGUAGE HINDI – III

Hindi Natak, Hindi Sahitya Ke Pramukh Sahityakar Aur Sankshepan

Time : 3 Hours

Max. Marks : 70

- I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए : (1×10=10)
- 1) मगध के महामात्य का नाम क्या है ?
 - 2) कुसुमपुर किस नदी के किनारे बसा हुआ है ?
 - 3) उदीच्य खण्ड में किसकी हत्या हुई थी ?
 - 4) सुवास किसकी पत्नी है ?
 - 5) रुद्रसेन ने किसका अपहरण किया था ?
 - 6) 'चाणक्य और चाणक्य' के नाटककार का नाम लिखिए ।
 - 7) सुवास को साम्राज्ञी बनाने का प्रलोभन किसने दिया ?
 - 8) विष्णुगुप्त को किस नाम से जाना जाता है ?
 - 9) चाणक्य का जन्म कहाँ हुआ था ?
 - 10) विद्यापीठ की स्थापना किसने की ?
- II. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो का संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : (7×2=14)
- 1) तुम नहीं समझोगे मेरे निर्माण को, इस निर्माण में एक राष्ट्र का स्वप्न था ।
 - 2) निरंकुशता का विरोध करने के लिए जिस निर्भयता की आवश्यकता होती है, मेरी विद्यापीठ में उसी निर्भयता का पाठ पढ़ाया जाता है ।
 - 3) मनुष्य संसार के सामने रंग-बिरंगे परिधानों में संवर कर आ सकता है, परन्तु अपने सामने वह अपनी नम्रता नहीं छिपा सकता ।

P.T.O.



III. किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए :

(16×1=16)

- 1) “किसी भी रहस्यात्मक व्यक्ति को एक कीमत चुकानी पड़ती है, यही चाणक्य भी चुकाता है”
- नाटककार के इस कथन की समीक्षा नाटक के आधार पर कीजिए ।
- 2) ‘चाणक्य और चाणक्य’ नाटक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

IV. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(5×2=10)

- 1) न्यायपीठ का दृश्य ।
- 2) चन्द्रगुप्त ।
- 3) चाणक्य एवं सुवास का संवाद ।

V. किसी एक साहित्यकार का परिचय दीजिए :

(10×1=10)

- 1) रामचन्द्र शुक्ल ।
- 2) मन्नु भण्डारी ।

VI. निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए :

10

अच्छा स्वास्थ्य जीवन का सर्वोत्तम धन है । अतएव इसे बनाए रखने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए । स्वास्थ्य के बिना जीवन नीरस हो जाता है । रोगी शरीर तो किसी कार्य का नहीं । जिस प्रकार धुन खायी लकड़ी होती है , उसमें भार सहने की शक्ति होती ही नहीं, उसी प्रकार रोगी शरीर भी अति कमजोर हो जाता है । वह जीवन-संघर्ष में भी असमर्थ रहता है और सहनशीलता तो उसमें शेष रहती ही नहीं । परिणामतः उससे निराशा, उत्साह हीनता, कार्य में अरुचि और आलस्य आ जाता है ।